ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 13 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 23 जनवरी, 2023 से रविवार 29 जनवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती: दो वर्षीय आयोजन

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी करेंगे 12 फरवरी को शुभारंभ

तैयारियों को लेकर आर्य समाज हर स्तर पर उत्साह पूर्वक सक्रिय

दिल्ली के बाहर के लोग जो दिल्ली नहीं आ पा रहे हैं वे 12 फरवरी 2023 को प्रातः 09:00 बजे अपने आर्यसमाज/संस्थान में एल.ई.डी. स्क्रीन अथव टी.वी. पर आर्य संदेश टी.वी. चलाकर सबको भागीदार बनायें

5 फरवरी को अपने घरों को लाइटों, लड़ियों से सजाना आरम्भ करें और 12 फरवरी तक अवश्य ही सजाएं, ओ३म् ध्वज लगायें, सजे हुए घरों के साथ अपने परिवार की फोटो लेकर सोशल मीडिया पर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

आर्य समाज के भवनों, विद्यालयों, गुरुकुलों एवं आर्य संस्थाओं के भवनों को सुन्दरता से सजाया जाए, और बाहर बधाई के दो या तीन होर्डिंग लगाये जाएं। होर्डिंग का डिजाइन www.thearyasamaj.org से डाउनलोड करें

5 से 11 फरवरी के बीच किसी भी दिन सभी सदस्य शाम को संध्या के लिए एकत्रित हों और सजे हुए भवन के साथ फोटो लेकर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

सब सदस्य एक-एक करके महर्षि के चित्र के साथ वीडियो बनायें और बधाई संदेश देते हुए सोशल मीडिया पर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

सभी आर्यजन अपने क्षेत्रीय समाचार पत्रों में उपरोक्त बिंदुओं पर आधारित चित्र सहित समाचार अवश्य प्रकाशित करवाएं

दिल्ली एनसीआर के आर्य समाजों में उत्साह की लहर क्षेत्रीय बैठकों का दौर लगातार गतिशील

महर्षि के जन्मोत्सव को लेकर उमंग उल्लास में सराबोर आर्यजनों ने एक स्वर में कहा- महर्षि की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस हमारे लिए एक विशेष अवसर

12 फरवरी 2023 के भव्य आयोजन को लेकर आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम द्वारा 21 जनवरी को आर्य समाज सेक्टर-7 में वृहद बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी, कार्यकर्ता और विभिन्न आर्य समाजों के प्रधानमंत्री आदि सदस्य भारी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु पूरा योगदान देने का संकल्प लिया तथा पूरे हरियाणा में कार्यक्रम को लेकर उमंग, उत्साह के वातावरण की जानकारी दी।

बैठकों के इस क्रम में दक्षिणी दिल्ली की आर्य समाजों की विशेष बैठक आर्य समाज सफदरजंग इन्क्लेव में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। जिसमें दक्षिणी दिल्ली के समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने महर्षि की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को लेकर आशा और विश्वास व्यक्त किया

- शेष पृष्ठ 3 पर

तैयारियों को लेकर बैठकों के इस क्रम में मध्य दिल्ली रोहिणी, कीर्ति नगर, पश्चिमी दिल्ली एवं आर्य विद्यालयों सहित कई बैठकें सफलता पूर्वक सम्पन्न हुईं।

वेदवाणी-संस्कृत

वही सम्राट है

वेद-स्वाध्याय

एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड्धन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः।
पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो देव्यस्य॥

-ऋक्. 4 । 21 । 10

ऋषिः-वामदेवः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-त्रिष्टुप्॥

शब्दार्थ- **इन्द्रः**=परमेश्वर **एव**=ही **वस्वः**=ऐश्वर्य का **सत्यः सम्राट्**=सच्चा सम्राट् है, **वृत्रम्**=शत्रु को, बाधा को **हन्ता**=विनाश करने वाला वह **पूरवे**=मनुष्य के लिए **वरिवः**=सेवन को या ऐश्वर्य को **कः**=करता है। **पुरु स्तुत**=हे बहुतों से स्तुति किये गये तू **नः**=हमें **क्रत्वा**=कर्म व प्रज्ञा से **रायः**=ऐश्वर्य को (पाने के लिए) **शग्धि**=समर्थ बना, मैं **ते**=तेरे **दैव्यस्य अवसः**=दिव्य रक्षण को **भक्षीय**=भोगूँ, प्राप्त करूँ।

विनय- परमेश्वर ही सच्चे सम्राट् हैं। इस संसार में मेरे लिए और कोई सम्राट् नहीं है। संसार के सम्राट् कहे जाने वाले मनुष्य झूठे सम्राट् हैं, बिलकुल अनीश्वर, अशक्त, तुच्छ प्राण ी हैं- यह मुझे पग-पग पर अनुभव होता है। इन मनुष्य-सम्राटों का अस्तित्व तो उस इन्द्र के मुकाबले में खिलौने के सम्राट् से अधिक नहीं है। इन्द्र जब चाहते हैं तब क्षण में इन 'सम्राटों' को ऊपर से उठाकर नीचे रख देते हैं, इस लोक से उठाकर परलोक में कर देते हैं। इस विश्व में जो भी कुछ वसु जहाँ भी कहीं दिखाई देता है उसके अधीश्वर तो ये इन्द्र ही हैं। इन ऐश्वर्यों का स्वामी मैंने कभी किसी और को नहीं समझा है। ऐसे जगत् के अधीश्वर होते हुए ये इन्द्र मनुष्य का सेवन कर रहे हैं, प्रत्येक मनुष्य की सेवा कर रहे हैं। मनुष्य के वृत्रों, शत्रुओं का हनन करते हुए और नानाविध ऐश्वर्य देते हुए उनकी सेवा कर रहे हैं। सचमुच असली सम्राट् सेवा करने वाला ही होता है। प्रजाजनों की उन्नति में बाधक सब विघ्न-बाधाओं को (वृत्रों को) हटाना तथा उनमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक ऐश्वर्यों को विकसित करना, यही सम्राट् का कर्त्तव्य होता है। हे सच्चे सम्राट्! हे सबसे स्तुति किये गये प्रभो! मैं तुझसे क्या माँगूँ? मैं जिन ऐश्वर्यों के योग्य हूँ उन्हें तुम मुझे दे ही रहे हो। मुझे तो तुम यह शक्ति प्रदान करो कि मैं तुम्हारे इन ऐश्वर्यों को पाने और रखने में समर्थ हो सकूँ। मेरे 'क्रतु' को, मेरे कर्म व प्रज्ञा को तुम ऐसा बनाओ, ऐसा बलवान् और शुद्ध बनाओ कि इन द्वारा मैं तेरे ऐश्वर्यों को पाने का पात्र हो जाऊँ। तब मैं तेरे दैव रक्षणों का भी भागी हो जाऊँगा। ये सांसारिक बादशाह मेरी रक्षा करते हैं या मुझे मारते हैं- इसकी मुझे कुछ भी परवाह नहीं होती। उनके मानुष रक्षणों के पाने की मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं रहती। मैं तो तेरे दैव रक्षणों को पाना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि तेरी दिव्य रक्षा मुझे मिलेगी तो दुनिया में मेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा। इसलिए हे सच्चे सम्राट्! मैं तो एक तेरे ही साम्राज्य के नीचे रहना चाहता हूँ और केवल तेरे ही दिव्य रक्षण को पाना चाहता हूँ।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

महापुरुष जन्म लेंगे सूना न जहां होगा, ऋषि देव दयानन्द सा दुनिया में कहां होगा

ऋषि मुनियों की पुण्य भूमि भारत में 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में उस समय हुआ, भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, चारों तरफ अज्ञान, अविद्या, अंधकार फैला हुआ था। मानव समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों में जकड़ा हुआ था, जातिवाद, छुआछूत ऊंच-नीच और भेदभाव का चारों ओर बोलबाला था। महर्षि ने संपूर्ण विपरीत परिस्थितियों को स्वयं नजदीक से देखा और अनुभव किया कि भोली भाली जनता अज्ञान, अविद्या के कारण दुख पीड़ा और संतापों से कष्ट क्लेश में जीवन बिता रही है। महर्षि ने घोर तप, त्याग, साध ना, स्वाध्याय के तपोबल से एक लंबी संघर्ष पूर्ण यात्रा की।

सन् 1860 में महर्षि दयानंद मथुरा में स्वामी विरंजानंद दंडी के तपोवन में पहुंचे और तीन वर्ष गुरु से शिक्षा प्राप्त कर भारत के नव निर्माण के लिए समर्पित हो गये। इस दौरान महर्षि ने अनेकों शास्त्रार्थ किए, सत्यार्थप्रकाश सहित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि इत्यादि अनेकानेक ग्रंथ लिखे। विधर्मी और विरोधियों से संघर्ष किया और विजय पताका फहराई। उनके ऊपर जानलेवा हमले किए गए, विष दिया गया, प्रलोभन और दबाव बनाए गए, लेकिन महर्षि ने वेद मार्ग पर चलते हुए सबका डटकर सामना किया। भारत कीआजादी के लिए क्रांतिकारी अलख जगाई, परिणाम स्वरूप क्रांतिकारियों की टोलियां निकलने लगीं और एक नया वातावरण निर्मित हो गया।

> ***"सन् 1860 में महर्षि दयानंद मथुरा में स्वामी विरंजानंद दंडी के तपोवन में पहुंचे और तीन वर्ष गुरु से शिक्षा प्राप्त कर भारत के नव निर्माण के लिए समर्पित हो गये। इस दौरान महर्षि ने अनेकों शास्त्रार्थ किए, सत्यार्थप्रकाश सहित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि इत्यादि अनेकानेक ग्रंथ लिखे। विधर्मी और विरोधियों से संघर्ष किया और विजय पताका फहराई। उनके ऊपर जानलेवा हमले किए गए, विष दिया गया, प्रलोभन और दबाव बनाए गए, लेकिन महर्षि ने वेद मार्ग पर चलते हुए सबका डटकर सामना किया। भारत कीआजादी के लिए क्रांतिकारी अलख जगाई , परिणाम स्वरूप क्रांतिकारी टोलियां निकलने लगीं और एक नया वातावरण निर्मित हो गया।"***

महर्षि दयानंद ने 1863 में गुरु विरजानंद दंडी से शिक्षा प्राप्त कर जो आधुनिक भारत के नव निर्माण का संकल्प लिया था, उसके अनुरूप उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की और उसके उपरांत केवल 8 वर्ष महर्षि को मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का अवसर मिला। लेकिन महर्षि ने जो भारत राष्ट्र और विश्व के लिए किया है वह युगों युगों तक अविस्मरणीय रहेगा और उनके पद चिन्हों पर चलकर ही भारत ने आज आजादी के 75 वर्षों पर गौरव अनुभव करते हुए अमृत महोत्सव मनाया तथा, जल, थल और नभ में नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। संपूर्ण विश्व में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अग्रसर है। ऐसे अनोखे ,अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेख राम, स्वामी सत्यानंद, डॉक्टर रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानी लाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए यही कहूंगा कि जिसने भी महर्षि के आदर्श जीवन पर लिखने का सारगर्भित प्रयास किया वे मानव मात्र के लिए अनुकरणीय है।

महर्षि की शिक्षा और मान्यता के अनुसार मानवता की मनुष्य का सबसे बड़ा वैदिक धर्म आज के सार्वजनिक जीवन में सर्व-धर्म समभाव सब धर्मों (मतों) के प्रति आदर रखना एक चालू मुहावरा बन गया है। सच तो यह है कि सर्व-धर्म समभाव अथवा इसी आशय को व्यक्त करने वाले वाक्य बिना गहराई से सोचे-विचारे प्रयोग किये जाते हैं। धर्म जैसे व्यापक अर्थ देने वाले शब्द को हमने मत, सम्प्रदाय, पन्थ तथा मजहब का पर्याय बना दिया है। वस्तुतः सम्पूर्ण मानवजाति का धर्म एक है और वह है 'मानवता' जिसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, विश्व मैत्री, परस्पर प्रेम, विद्या-विवेक आदि शाश्वत मानव मूल्य आते हैं। महर्षि दयानन्द ने वर्षों पूर्व इस गुत्थी को सुलझाया था और स्पष्ट किया कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख तथा पारसी आदि को धार्म कहना उचित नहीं है। ये मत, पन्थ, सम्प्रदाय हैं। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुललास में एक जिज्ञासु और तत्त्ववेत्ता के संवाद के द्वारा उन्होंने स्पष्ट किया कि जो धर्म के मूल तत्त्व हैं वे सभी मतानुयायियों को मान्य होने के कारण मानव मात्र का समान धर्म है। इस प्रकार उन्होंने सत्य भाषण, विद्या-प्राप्ति, ब्रह्मचर्य पालन (संयमित जीवन), सत्संग, पुरुषार्थ तथा सत्य-व्यवहार को मानव का समान ध ार्म बताया जबकि अन्य बातों में उनकी भिन्नता को वे शाश्वत् धर्म नहीं कहते।

जब मानवता ही मनुष्य का एकमात्र धर्म है और मनुप्रोक्त दस लक्षण वाला धर्म सब लोगों के द्वारा

- शेष पृष्ठ 3 पर

आर्यजन कृपया ध्यान देवें

- 12 से 19 फरवरी पूरे सप्ताह भारत सहित विश्व के सभी आर्य परिवार अपने घरों को दीपमाला/लाइटिंग से सुन्दर सजाएंगे
- लाइटिंग से सुसज्जित घरों के फोटो सोशल मीडिया पर और अपने मित्र सर्कल में भेजेंगे तथा बधाई संदेश और महत्व भी लिखें
- भारत तथा विश्व के आर्य समाज मंदिरों को लाइटिंग से भव्यता पूर्वक सजाया जाएगा और सुसज्जित भवन के सामने आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य सामूहिक चित्र लेकर सोशल मीडिया और अपने मित्रों को भेजें
- सभा द्वारा 200 वीं जयंती का बनाया हुआ बड़ा होर्डिंग्स अपने आर्य समाज के सामने लगाएं और अन्य संसाधनों से भी अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें
- 15 फरवरी दयानंद दशमी को आर्य समाजों में यज्ञ करें एवं गरीबों तथा वंचित वर्ग को ध्यान में रखकर सेवा कार्य जैसे भोजन, फल, वस्त्र, पुस्तक आदि साहित्य का वितरण करें
- 12 फरवरी 2023 को दिल्ली और आस-पास की समस्त आर्य समाजें अपने हर आयु वर्ग के सदस्यों के साथ भारी संख्या में बसों द्वारा कार्यक्रम में पहुंचे, सभी आर्यजन गले में पीत वस्त्र, सिर पर केसरिया पगड़ी अथवा टोपी पहनकर, महर्षि की महिमा के गीत गाते हुए, नारे लगाते हुए उत्साह पूर्वक कार्यक्रम स्थल पर प्रवेश करें
- दिल्ली से दूर भारत एवं विश्व की समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं 12 फरवरी को 10:00 से 1:00 बजे तक का विशेष आयोजन अपने संस्थानों में रखें, जिसमें एक बड़ी स्क्रीन लगाकर सभी आम जनता को आमंत्रित कर दिल्ली से मोदी जी का आह्वान् उद्बोधन अवश्य सुनें और सबको सुनाएं

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

पुराण

96-पुराण

ऋषि-मुनि-कृत सत्यार्थमय
पुस्तक पूर्ण प्रमाण ।
ऐतरेय, शतपथ कथित हैं
प्राचीन 'पुराण' ।।117।।
नाराशंसी, कल्प जो
ब्राह्मणादि इतिहास ।
गाथाएं भी जानिए
उनके नामोल्लास ।।118।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

पृष्ठ 1 का शेष भाग

कि इस भव्य आयोजन की सफलता में दक्षिणी दिल्ली की आर्य समाजें विशेष भूमिका निभायेंगी।

पूर्वी दिल्ली की आर्य समाजों की वृहद बैठक का आयोजन आर्य समाज सूरजमल विहार में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय सभी आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित आर्यजन उपस्थित रहे। सभी ने 12 फरवरी के आयोजन को ऐतिहासिक और प्रेरणाप्रद बताते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। हम सब मिलकर इस कार्यक्रम को अभूतपूर्व ओर ऐतिहासिक रूप से सफल बनाने में तन, मन, धन से पूरा सहयोग देंगे।

200 वीं जयंती पर कुछ विशेष नारे

महर्षि की 200 वीं जयंती, आर्य समाज की नयी क्रांति

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 की जयंती और आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस, दोनों ऐतिहासिक अवसरों को ध्यान में रखते हुए 12 फरवरी 2023 के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ अवसर पर आर्य जन महर्षि की महिमा और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास की गूंज को जन जन तक पहुंचाने हेतु सारगर्भित, प्रेरक नारों का उद्घोष करें, मधुर भजनों का गान करें और उमंग उत्साह और उल्लास का परिचय देवें।

- ❐ सबसे प्यारा, सबसे न्यारा, महर्षि 200 पर्व हमारा
- ❐ हम आर्य समाजी आर्य बनाएं, विश्व धरा को दिशा दिखाएं
- ❐ महर्षि का 200 जन्मदिवस है आर्यजनों का प्रेरणा पर्व है
- ❐ जब चारों तरफ अंधेरा था तब ऋषि सवेरा लाया था
- ❐ महर्षि की 200 वीं जयंती आर्य समाज की नयी क्रांति
- ❐ घर घर वेद पहुंचाएंगे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाएंगे
- ❐ 10 लोगों को नया जोड़कर कीर्तिमान बनाएंगे
- ❐ करोड़ों की संख्या को अरबों तक पहुंचाएंगे
- ❐ महर्षि की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाएंगे
- ❐ 200 वीं जयंती को 2 वर्षों तक मनाएंगे

आर्यजन कृपया निम्नलिखित बिंदुओं पर अवश्य ध्यान दें

आर्य समाज के इस महान अवसर पर संपूर्ण भारत की आर्य समाजें, आर्य परिवार, आर्य शिक्षण संस्थान, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय, वानप्रस्थाश्रम, संन्यास आश्रमों सहित संपूर्ण आर्य जगत परिवार पूरे दलबल के साथ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित होने वाले महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के शुभारंभ अवसर पर पूरे दलबल के साथ सम्मिलित होवे।

आइए, महर्षि दयानंद सरस्वती के 200 वें जन्म वर्ष के विश्व भर में होने वाले आयोजनों के भव्य शुभारंभ के हम साक्षी बनें ,सभी अपने इष्ट मित्रों, सपरिवार स्त्री-पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग, युवा सब सम्मिलित होकर आर्य समाज के संगठन की शक्ति का परिचय देवें।

- ★ प्रधानमंत्री के पदार्पण से पूर्व प्रातः 8:00 बजे इंदिरा गांधी स्टेडियम पहुंचे
- ★ सभी अपनी बस, टेंपो, कार , बाइक आदि पर ओम ध्वज और बैनर लगाकर आएं
- ★ गले में पीत वस्त्र, सिर पर पगड़ी अथवा टोपी अवश्य पहनकर आने का प्रयास करें
- ★ किसी भी प्रकार का कोई चाकू, बैग, लंचबॉक्स, पानी की बोतल आदि साथ न लाएं
- ★ महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती के आयोजनों के आरंभ के अवसर पर बड़े होर्डिंग्स, बैनर अपनी आर्य समाज के सामने अथवा चौराहे पर लगाएं
- ★ उमंग उत्साह और उल्लास के साथ ही अनुशासन और व्यवस्था का स्वयं ही ध्यान रखें

पृष्ठ 2, संपादकीय का शेष भाग

मान्य है तो सवाल यह है कि मनुष्यों को भिन्न-भिन्न मतों, पन्थों में बांटने का हानिकारक काम क्यों किया गया? उत्तर में कहा जा सकता है कि नैतिकता और सदाचार को सर्व सम्मत धार्म मान लेने के उपरान्त भी विभिन्न देशों में परमात्मा की पूजा उपासना के भिन्न-भिन्न तरीके ईजाद किये गये और उसी के अनुरूप आचार-विचार, शौच-अशौच तथा वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्मकाण्ड में पृथकता आती गई। यही कारण है कि भारतवर्ष में जब वैदिक धर्म का पतन हुआ तो जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि मत पैदा हुए और इनके बाद शैव, शाक्त, वैष्णव, सगुण-निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय तथा सन्त-तम प्रवर्तित हुए। उधर ईरान में महात्मा जरयुस्त (जोरेस्टर) ने पारसी मत को जन्म दिया। इसके तत्काल बाद मध्य एशिया (पैलेष्टाइन तथा अरब) में पैगम्बरों की अवधाारणा वाले यहूदी, ईसाई तथा ईसाई-सैमेटिक मतों का जन्म हुआ। ये मत वे थे जो तौरेत, बाईबिल तथा कुरान नाम वाली ईश्वरीय पुस्तकों तथा मूसा-ईसा-मुहम्मद नाम वाले ईशदूतों (पैगम्बरों) के उपदेशकों को महत्त्व देते थे। ध्यान रहे कि भारतीय मान्यता के अनुसार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानना तथा किसी किताब को खुदाई कलाम मानने की धारणा में मौलिक अंतर है। सैमेटिक मजहबों में देश, काल और परिस्थिति के अनुसार भिन्नता दिखाई देती है। ये विभिन्न खेमों में मानवता को बांटते हैं।

तब प्रश्न होता है कि क्या धार्मिक आस्थाओं, विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं, आचारमत भिन्नता तथा कर्मकाण्ड की भिन्नता के होते हुए क्या मानव समुदाय में एकता तथा अविरोध सम्भव है?

महर्षि दयानन्द इसके उत्तर में कहते हैं कि परस्पर विचार-विनिमय तथा सौहार्दपूर्ण चर्चाओं के द्वारा हम शाश्वत् मानव धर्म की एकता को स्वीकार कर सकते हैं। यही कारण है कि सर सैयद अहमद खां, ईसाई पादरी डॉ. स्काट आदि सैमेटिक मतों वाले पुरुष महर्षि दयानन्द भक्त और प्रशंसक बन गये थे। उनका कहना था कि कोई मनुष्य अपनी निजल मजहब विषयक मान्यताओं को रखते हुए भी अन्य मत वालों से प्रेम तथा बन्धुतव का भाव रख सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो सर्व धर्म समभाव तथा सब मत-सम्प्रदाय एक हैं, एक सी शिक्षा देते हैं जैसे पाखण्डपूर्ण, अर्थहीन कथन व्यर्थ हो जाते हैं। सर्व धर्म समभाव का नारा लगाने वाले गीता, वेद, कुरान, बाईबिल और ग्रन्थ साहब को एक ही श्रेणी में रखते हैं तथा उनकी शिक्षाओं को एक सा (एक ही) बताते हैं। सच तो यह है कि इन बड़बोले, बेसमझ लोगों ने न तो वेद और गीता को पढ़ा और न बाइबिल या कुरान के दर्शन किए।

यदि तटस्थ भाव से उपर्युक्त ग्रन्थों का अध्ययन किया जाये तो इन ग्रन्थों की पृथक्-पृथक् विषय वस्तु तथा इनमें प्रतिपादित मन्तव्यों के अन्तर को हम समझ सकेंगे। तब हमें पता चलेगा कि वेद की शिक्षाएं शाश्वत्, सर्वदेशीय तथा सर्व स्वीकार्य हैं। अतः हमें महर्षि के उपकारों को स्मरण करते हुए, उनकी 200 वीं जयंती पर आयोजित होने वाले विभिन्न विशाल आयोजनों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए। 12 फरवरी 2023 को हो रहे 2 वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ में हमें यह संकल्प लेना चाहिए की मानव समाज में धर्म समभाव के नाम पर फैल रहे अंधेरों को मिटाने हेतु सत्यार्थ प्रकाश आदि उनकी प्रमुख रचनाओं को जन जन तक पहुंचा कर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की वास्तविकता का परिचय देना चाहिए।

-संपादक

सोमवार 23 जनवरी, 2023 से रविवार 29 जनवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26-27 जनवरी, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 25 जनवरी, 2023

डॉ. आचार्या सुकामा जी को पद्मश्री मिलने पर हार्दिक बधाई

त्याग, तपस्या और साधना की प्रतिमूर्ति, आर्य समाज की विदुषी, कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक, हरियाणा की संचालिका, आदरणीया डॉ सुकामा जी को पद्मश्री सम्मान प्राप्त होने से संपूर्ण आर्य समाज गौरवान्वित है। संपूर्ण आर्य समाज की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

धर्मपाल आर्य
प्रधान

विनय आर्य
महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

12 फरवरी के आयोजन को लेकर प्रिन्ट मिडिया की प्रशंसनीय कवरेज

सभी आर्य संस्थाएं अपने-अपने क्षेत्रों में करें आयोजन का विस्तृत प्रचार

राजस्थान पत्रिका patrika.com
नई दिल्ली, गुरुवार, 19 जनवरी 2023

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर आयोजित होंगे कई कार्यक्रम

नई दिल्ली @ पत्रिका. महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के अवसर पर विश्व भर दो वर्ष तक कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा... प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 12 फर... 2023 को दिल्ली में...

शाह टाइम्स
नई दिल्ली, मंगलवार, 17 जनवरी 2023

महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म उत्सव पर आयोजित होंगे कार्यक्र...

नई दिल्ली। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ... 200वां जन्मोत्सव फरवरी 2024 में पूर्ण होगा। इस ऐतिहासिक अव... दो वर्षीय योजना तैयार की गई है। इन दो वर्षों ...

खबर संक्षेप

धूमधान से मनेगी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती

नई दिल्ली। आधुनिक भारत के निर्माता, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का 200 वां जन्मोत्सव फरवरी 2024 में पूर्ण होगा। इस ऐतिहासिक अवसर को आयोजित करने के लिए दो वर्षीय योजना तैयार की गई है। इन दो वर्षों में विश्व के अनेक देशों और भारत के प्रत्येक राज्य में अनेक आयोजन होंगे। आयोजनों का शुभारंभ भारत की राजधानी नई दिल्ली से 12 फरवरी 2023 को होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इन आयोजनों

दीपावली की तरह मनाएंगे जन्मदिव...

रोहतक। हरियाणा आर्य प्रति... सभा प्रधान राधाकृष्ण आ... पदाधिकारियों और सदस्यों के ... दयानंद मठ में बैठक की। इस ... से 15 फरवरी तक दिल्... वाले विश्वव्यापी कार्यक्र... चर्चा की गई। गौरतलब ... में महर्षि दयानंद सरस्वत... 200 वर्ष पूरे होंगे। इस ...

प्रदेश भर में धूमधाम से मनाई जाएगी दयानंद सरस्वती जयंती : राधाकृष्ण

महर्षि दयानंद के 200वें जन्मोत्सव कार्यक्रम का पीएम करेंगे उद्घाटन

- आइजीआइ स्टेडियम में 12 फरवरी को कार्यक्रम होगा, 20 हजार से अधिक लोग होंगे शामिल
- आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूरे होने पर दो वर्ष तक 35 देशों में होंगे कार्यक्रम

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : आर्य समाज ...

10 हजार से ज्यादा मंदिर और संस्थाएं होंगी सहभागी

इस ऐतिहासिक अवसर को देशभर में स्थित 10 हजार से ज्यादा आर्य समाज मंदिर तथा संस्थाओं के साथ ही विश्वविद्यालय, कालेज, डीएवी स्कूल, गुरुकुल, धर्मशालाओं व अनाथालयों के साथ ही अन्य सेवा कार्यों को भी सहभागी बनाया जाएगा। दुनिया भर में 35 देश में आर्य समाज के मंदिर व स्कूल हैं और वहां आर्य समाज की गतिविधियां होती हैं।

... प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री से मिला था और उन्हें आमंत्रित किया था। आयोजकों के ...

महान समाज सुधारक, महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर प्रधानमंत्री मोदी करेंगे विश्वव्यापी कार्यक्रमों का शुभारंभ

नई दिल्ली (सुदेश आर्या)। आधुनिक भारत के निर्माता, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव फरवरी 2024 में पूर्ण होगा। इस ऐतिहासिक अवसर को आयोजित करने के लिए दो वर्षीय योजना तैयार की गई है। इन दो वर्षों में विश्व के अनेक देशों और भारत के प्रत्येक राज्य में अनेक आयोजन ...

4 स्थानीय 16 जनवरी, 2023 सोमवार प्रादेशिक, आसपास एवं अन्य गतिविधियां पंजाब केसरी

युवाओं को आर्य समाज की ओर उन्मुख करना जरूरी: किरण चोपड़ा

12 फरवरी को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली में आर्य समाज का करेंगे विश्वव्यापी कार्यक्रमों का शुभारंभ

खबरनामा

दीपावली की तरह मनाएं महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव

रोहतक 23 जनवरी (स.ह.) : हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ...

प्रदेश भर में धूमधाम से मनाई जाएगी दयानंद सरस्वती जयंती : राधाकृष्ण

जागरण संवाददाता, रोहतक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ दयानंद मठ रोहतक में बैठक की। जिसमें सभी को 12 से 15 फरवरी तक दिल्ली में आयोजित होने वाले विश्वव्यापी कार्यक्रम को लेकर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि 12 फरवरी से दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो वर्ष तक आयोजित ... को जन जन तक पहुंचा कर पाखंड के खिलाफ बिगुल बजाया। उन्होंने कहा कि सभी महर्षि दयानंद सरस्वती ... प्रचार वाहनों द्वारा गांव-गांव महर्षि दयानंद सरस्वती के ... नीतियों का गुणगान किया जा...

दयानंद मठ में बैठक लेते आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य व मौजूद अन्य।

... पर होंगे विश्वव्यापी क...

नई दिल्ली, 15 जनवरी (नवोदय टाइम्स): आधुनिक भारत के निर्माता ... दयानंद सरस्वती का 2... फरवरी 2024 में होगा ...

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ **सत्यार्थ प्रकाश** सत्य के प्रचारार्थ

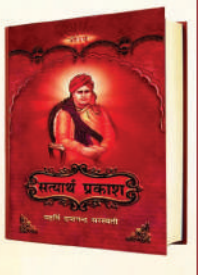

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह